ये मेरा इस्लाम नहीं है

'कतबना अला बनी इस्राईला अन्नहु मन कताला नफसन बिगैरी नफसिन औ फसादिन फिल अर्ल्दे फकअन्नामा कतलन–नासा जमींअन वमा आहयाहा फकअन्नामा आहयाहा अन्नासा जमींअन'

कुरान की इस आयत का मतलब है कि ''अगर किसी व्यक्ति ने किसी बेगुनाह इंसान को मारा तो मानो पूरी मानवता को मारा और अगर किसी व्यक्ति ने किसी बेगुनाह इंसान की जान बचाई तो मानो पूरी इंसानियत को बचाया''।

इसके अलावा कुरान में खुदकुशी को हराम करार दिया गया है और कहा गया है कि खुदकुशी करना बहुत बड़ा गुनाह है। कुरान की इन आयतों के बाद ये स्पष्ट हो जाता है कि इस्लाम में दहशतगर्द या आत्मघाती हमलों के लिए कोई जगह नहीं है और जो लोग जेहाद के नाम पर ऐसा कर रहे हैं वे इस्लाम धर्म और कुरान का सही मायनों में अनुसरण नहीं कर रहे हैं।

ऐसे समय में जब पूरी दुनिया में आतंकवाद को इस्लामी जेहाद का पर्याय बनाने की कोशिश की जा रही है, कुरान की ये व्याख्या करना जरूरी हो जाता है।

इस संदर्भ में एक तर्क यह भी दिया जाता है कि पैगम्बर मोहम्मद ने अपने जीवनकाल में कई युद्ध लड़े और उनमें से कई में उन्होंने खुद शिरकत की और ऐसा करके जेहाद किया। यहां ये बताना जरूरी है कि पैगम्बर मोहम्मद ने उस समय तक स्वयं कोई युद्ध नहीं किया जबतक उनपर युद्ध थोपा नहीं गया। जब वे युद्ध लड़ने की स्थिति में नहीं थे तो उन्होंने हिजरत का रास्ता अपनाया और मक्का से चुपचाप हिजरत करके मदीना चले गए। जब उनपर युद्ध थोपे गए तो आत्मसुरक्षा के लिए पैगम्बर ने बहादुरी के साथ उनका मुकाबला किया लेकिन इन युद्धों के दौरान उनके बहुत ही स्पष्ट नियम, कानून होते थे यानी युद्ध के दौरान बूढ़ों, महिलाओं और बच्चों पर हमला नहीं किया जाएगा और अगर वे युद्धबंदी बनाए गए तो उनके साथ अच्छा सलूक किया जाएगा।

इस्लाम में पैगम्बर मोहम्मद के हर कृत्य को सुन्नत कहा जाता है और हर मुसलमान से ये अपेक्षा की जाती है कि वह पैगम्बर की हर सुन्नत पर अमल करे, और पैगम्बर की इस सुन्नत से भी ये स्पष्ट हो जाता है कि वे किसी निरीह, बेसहारा और मासूम लोगों की हत्या किए जाने के खिलाफ थे।

अपने जीवनकाल में जब पैगम्बर मोहम्मद ने मक्का फतह किया और वापस उस स्थान पर पहुंचे जो उनका जन्मस्थान था और जहां से उन्हें बहुत अपमानित करके मक्का छोड़ने पर मजबूर किया गया था, तो मक्का के लोग बहुत डरे, सहमे थे और सोच रहे थे कि पैगम्बर मोहम्मद पता नहीं उनके साथ कैसा सलूक करेंगे लेकिन पैगम्बर साहब ने अपना धार्मिक उपदेश देते हुए मक्का के लोगों से कहा कि उन्हें डरने या घबराने की कोई जरूरत नहीं है और उनके साथ कोई बदसलूकी नही की जाएगी।

पैगम्बर मोहम्मद ने अपने जीवन के अंतिम दिनों में केवल एक बार हज किया और इस अवसर पर अपना अंतिम उपदेश देते हुए इंसानियत और भाईचारे को बढ़ावा देने वाली बातें करते हुए कहा कि इंसान–इंसान में रंग, जाति और अमीर–गरीब के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए और सभी इंसान बराबर हैं।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि इस्लाम में जान का बहुत ऐहतराम किया गया है और किसी भी स्थिति में जान न देने की बात बार–बार दोहराई गई है। साथ ही यह भी कहा गया है कि लोगों जमीन पर फितना (दंगा–फसाद) ना फैलाओ क्योंकि अल्लाह फितना फैलाने वालों को पसंद नहीं करता और बार–बार अम्म–शांति को बढ़ावा देने और भाईचारा बढ़ाने की बात कही गई है। कुरान में सामाजिक बराबरी को बढ़ावा देने पर भी काफी जोर दिया गया है और बार–बार कहा गया है कि गरीब, यतीम, मिस्कीन और बेसहारा लोगों की मदद करो और उन्हें यह अहसास मत होने दो कि उनके पास कुछ नहीं है। कुरान में यहां तक कहा गया है कि अपने आसपड़ोस में ये देख लो कि कोई भूखा तो नहीं रह गया है क्योंकि अगर किसी इंसान का पड़ोसी भूखा है तो उसका खाना हराम है।

कुरान, इस्लाम और पैगम्बर मोहम्मद के संदेशों के बाद यह बात बिलकुल स्पष्ट हो जाती है कि आजकल इस्लाम के नाम पर जो खून–खराबा, आतंकवाद और नफरत फैलाई जा रही है उसका इस्लाम के सही मायनों से

कोई लेनादेना नहीं है और ऐसा करने वाले सच्चे मुसलमान होने का दावा नहीं कर सकते। ऐसे लोगों की जितनी निंदा की जाए कम है और जरूरत इस बात की है कि इस्लाम के सही अर्थों को लोगों तक पहुंचाया जाए और बताया जाए कि जो लोग जेहाद के नाम पर खून–खराबा कर रहे हैं उनका धर्म से कोई लेनादेना नही है और ऐसा वे या तो अपने राजनीतिक हितों को साधने के लिए कर रहे हैं या अंजाने में उन राजनीतिक षड्यंत्रों का शिकार हो रहे हैं जो दशकों पहले उन्हें फंसाने के लिए रचा गया था।

समूचे अरब जगत में तेल निकलने से पहले पश्चिमी देशों या अमरीका की कोई रूचि नहीं थी लेकिन जब वहां तेल निकलना शुरू हो गया और लगने लगा कि अरब देश बहुत जल्द समृद्ध हो जाएंगे तो उन्हें दुश्चक्र में फंसाने की साजिशें शुरू हो गईं।

यह सर्वविदित है कि सत्तर के दशक में जब अफगानिस्तान में तत्कालीन सोवियत रूस की सेनाएं काबिज थीं तो उनके खिलाफ युद्ध लड़ने के लिए अमरीका ने ऐसे तत्वों को बढ़ावा दिया जो बाद में तालिबान के रूप में सामने आए। इन लोगों में अलकायदा नामक संगठन का संस्थापक ओसामा बिन लादेन भी था। इसी दौर में ''सभ्यताओं के संघर्ष'' की कहानी गढ़ी गई और उसपर किताबें लिखवाई गईं। इस कहानी के जरिए प्रचारित किया गया कि अरब और मुसलमान मानवता के विरोधी हैं और पश्चिमी देशों के साथ उनका कोई तारतम्य नहीं हो सकता। जिन लोगों को सोवियत रूस के खिलाफ जेहाद करने के लिए तैयार किया गया था वही लोग बाद में अमरीका और पश्चिमी देशों के विरोधी के रूप में सामने आए और उसकी परिणति अमरीका और ब्रिटेन समेत कई देशों में हुए आतंकवादी हमलों के रूप में हुई और अभी भी यह क्रम रूका नहीं है।

इस बीच, इराक में पश्चिमी देशों द्वारा जिस तरह एक झूठे तर्क को आधार बनाकर युद्ध लड़ा गया उससे भी तथाकथित मुस्लिम चरमपंथियों को यह कहने का मौका मिला कि पश्चिमी देश मुसलमानों के खिलाफ हैं और इसलिए उनके खिलाफ की जाने वाली कोई भी कार्रवाई जेहाद है और बकौल उनके जायज है।

यदि अमरीका और पश्चिमी देश सही मायनों में लोकतंत्र के समर्थक हैं तो उन्हें न केवल इराक बल्कि दूसरे अरब देशों में लोकतंत्र कायम करने की

बात कहनी चाहिए और इसके लिए अंतर्राष्ट्रीय जनमत तैयार करना चाहिए लेकिन वे ऐसा नहीं करना चाहते क्योंकि अरब देशों की मौजूदा सरकारों को वे अपनी कठपुतली के रूप में इस्तेमाल करते हैं और यदि अरब देशों में लोकतांत्रिक रूप से चुनी हुई सरकारें बन गईं तो उन्हें अपनी मनमर्जी के मुताबिक काम करना मुश्किल हो जाएगा।